१) एफिमराल फीभर (वायरल बुखार, Ephemeral Fever)

"ढाइ दीन की वायरल फीवर
घुतकुमारी की बड़ा बिचार "

एफिमराल फीवर एक वायरल ज्वर है। बर्षात के दिन में वायरल बुखार फैलता है। बैल और गाय इसमे पिड़ित होते हैं। गाय की दुध में कमी होता है। बैल काम नहीं कर पाते हैं। ग्रामाचंल में किसानो ने इसके हर्वल इलाज घृतकुमारी की रस से करते हैं। घृतकुमारी की रस में आलोइन (Aloin), एमोड़ीन (Emodin), क्राइसोफानीक एसीड़ (Chrysophanic), बिटा बारबोलीन (Beta Barboline) के तत्व रहते हैं। ये सब तत्व स्नायु के उपर काम करते हैं। वायरल बुखार की उपर घृतकुमारी का अच्छा असर होता है। हल्दी में कुरकुमीन (Curcumin), टरमेरीक ऑयल (Turmeric Oil) जैसे तत्व होते हैं। ये तत्व वायरस को मार देते हैं।

बीमारी का लक्षण:-

- बुखार रहना।
- शरीर में दर्द होना।
- पशु लगंड़े हो जाते है।
- तीन दिनो के बाद पशु सुस्त हो जाता है।

हल्दी

बीमारी का कारण:-

- एफीमराल फीवर वायरस

बीमारी का चिकित्सा:-

- घृतकुमारी के ३-४ पत्ता लेकर छोटे छोटे काट कर ऊससे घृतकुमारी के रस निकाला जाता है।
- ४ चम्मच घुतकुमारी रस में २ चम्मच हल्दी का पाउड़र मिलाकर एक पेस्ट बनाया जाता है। इस पेस्ट को पशु को खिलाया जाता है। इसे दिन में २ बार, तीन दिनों तक खिलाया जाता है।

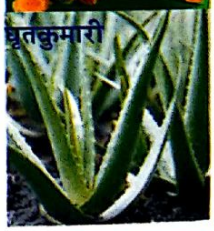
घृतकुमारी

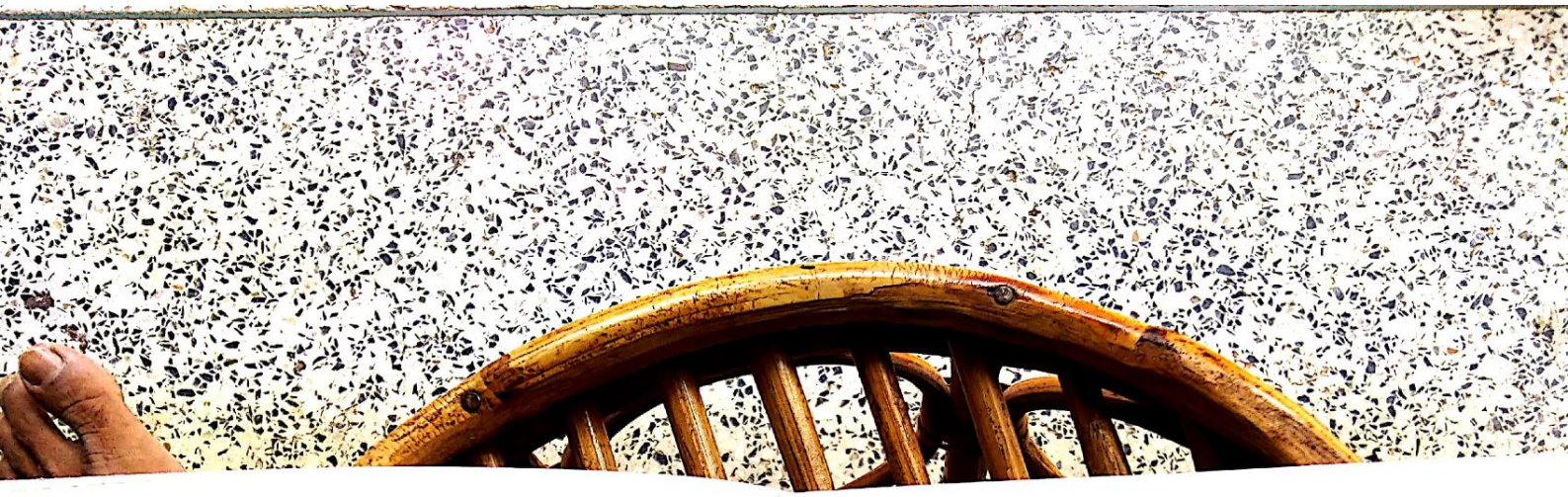

(२) तेज बुखार (High Fever)

"तेज बुखार और क्षीण शरीर
चीरयता, पिपली करो ब्यबहार "

तेज बुखार शरीर के लिए हानिकारक होता है। बछिया और छोटे पशुओं के लिए ये खतरनाक साबित हो सकता है। इसका इलाज तुरंत करना चाहिये। पारंपरिक उपाय में चीरयता और पिपली का इस्तेमाल करते हैं। चीरयता में चीराटीन् और आलकालएड्स् होते हैं जो बुखार को कम कर देते हैं।

बीमारी का लक्षण:-

- शरीर में बुखार।
- शरीर में कंपन।
- खाना पिना बन्द।
- स्वॉस तिव्र।
- नाक के उपर अंश का सुखा रहना (Dry muzzle)

बीमारी का कारण:-

- जीवाणु संक्रमण
- वायरल संक्रमण

बीमारी का चिकित्सा:-

- चीरयता का चुर्ण- ५० ग्राम
- पीपली का चुर्ण- २५ ग्राम

दोनो को मिलाकर ५० ग्राम् गुड़ के साथ दिन में २ बार तीन दिनों तक खिलायें।

पीपली चुर्ण

चीरयता चुर्ण

डॉ बलराम साहु

३) तेज बुखार-२ (High Fever-2)

"तेज बुखार और शरीर में कांप
काली मिर्च के साथ तुलसी को सौंप।"

तेज बुखार शरीर के लिये हानीकारक होता है। तेज बुखार बछड़ा और छोटे पशुओं के लिये अधिक हानीकरक होता है। थर्मो रेगुलेटरी अर्थात ताप नियन्त्रक केंद्र के उपर इसका असर पड़ता है। इसे शीघ्र दुर करना चाहिये। हमारे ग्रामाचंल में इसका एक सफल, सरल पारम्परिक चिकित्सा है। इसमें तुलसी का पत्ता, काली मिर्च का इस्तेमाल किया जाता है।

तुलसी की पत्ता मे काफंर (Camphor), सीट्रोनेलीक एसिड (Cetronelic Acid), इउगेनल (Eugenol), बोरनीओल (Borneol), ड़ाइपेन्टीन (Dipentene), टरपीनोलीन (Terpenoline), क्रीथमीन (Crithmin), लीमोनीन (Limonin), म्युसीलेज (Mucilage), टरपीन आदि तत्व होते हैं। ये सब तत्व जिवाणु बिरोधी, स्वासरोग बिरोधी के रुप में काम करते हैं। बुखार को कम करते हैं।

बीमारी का लक्षण:-

- शरीर में कंपन।
- शरीर की उपर बाल खड़े हो जाना।
- आँखों से पानी गिरना।
- शरीर दुर्बल हो जाना।
- खाना पिना छोड़ देना।
- गाय की दुध कम् हो जाना।

बीमारी का कारण:-

- जिवाणु संक्रमण
- वायरस संक्रमण

बीमारी का चिकित्सा:-

- तुलसी पत्ता- १०० ग्राम
- काली मिर्च - १० ग्राम
- प्याज- १०० ग्राम

इन सबको अलग् अलग् पिस कर सभीको मिला देते हैं और दिन में दो बार, ३ दिनो तक खिलाना चाहिये।

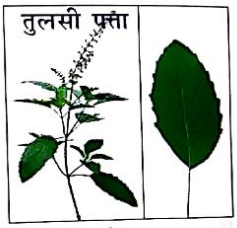

काली मिर्च

प्याज

४) ठंड, खांसी, बुखार (Cold, Cough, Fever)

"कफ और ठंड बड़ी आकार
काली मिर्च की चुर्ण आधार"

ठंड या बारीस के दिन में पशुओं में ठंड, कंफ, और बुखार दिखाई देता है। कभी कभी ये ठंड और कंफ बड़ी आकार में दिखाई देता है। इसकी पारम्परिक चिकित्सा बड़ी काम की होता है। इसके लिए काली मीर्च को उपयोग किया जाता है। काली मीर्च में पाइपरिन (Piperine), पाइपरीड़ीन (Piperidin) होते हैं। ये सब तत्व जिवाणु नाशक हाते हैं। जो ठंड का और बुखार की इलाज करते हैं।

बीमारी का लक्षण:-

- बुखार लगना
- ठंड
- छिकं
- कास
- खाना पिना कम् हो जाता है

बीमारी का कारण:-

- जीवाणु, वायरस की संक्रमण

बीमारी का चिकित्सा:-

१५-२० ग्राम् काली मिर्च को लेकर उसका चुर्ण बनाया जाता है। इस चुर्ण को गरम दुध के साथ पिलाया जाता है। दिन में एक बार ३ दिनों तक पिलाए।

काली मिर्च

५) पेसाब में खुन (लाल रंग,काफी रंग का मुत्र, Red Urine)

"खुन गिरती जब मुत्र के संग
चीरायता के साथ बदलाएं रंग।"

पशुओं में पेसाब के साथ कभी कभी खुन भी निकलता है। पेसाब लाल रंग का हो जाता है। लाल रंग या चॉकलेट की रंग से शरीर की बीमारी की लक्षण होता है। ब्लड् प्रोटोजोआ या खुन की परजीवी की वजह से लाल रंग का पेसाब होता है। इसकी पारम्परिक चिकित्सा चीरायता और आजबाईन से होता है।

चीरायता का पत्ता और पेड़ मैं आलकालएड् सा तत्व रहता है। ये तत्व घाव सुखने एंटीबायोटिक और टाइफएड् विरोधी काम् करता है। आजबाइन में सीरोपटीन (Searoptene), थाइमिन (Thymene) और थाइमल (Thymol) की तत्व रेहते हैं। ये तत्व परजीवी को मारते हैं। व्यथा, दर्द दुर करते हैं।

बीमारी का लक्षण:-

- पेसाब का रंग लाल होना
- कभी कभी पेसाब की रंग कॉफी के रंग का भी हो सकता है
- शरीर में बुखार होना

बीमारी का कारण:-

- बाबेसीआ जैसे प्लाड़ प्रोटोजोआ की संक्रमण
- थैलेरीया परजीबी का संक्रमण

बीमारी का चिकित्सा:-

- सौंठ -२५ ग्राम

चिरायता

सौंठ

- चिरायता- ५०ग्राम
- काली मीर्च- २५ ग्राम
- आजवाइन- २५ ग्राम

सबको अलग अलग पिस कर के मिलाकर ५० ग्राम् गुड़ के साथ दिन में एक बार तिन दिनों तक खिलाया जाता है।

६) मुहँ- खुर-रोग (Food and-Mouth Disease)- 1

"मुहँ-खुर रोग मुख में घाव
मेथी, जीरा, प्याज, जल्दी खिलाओ"

गाय, भैंस, भेड़, बकरिओं को मुहँ-खुर रोग होता है। मुहँ-खुर रोग वायरस के कारण होता है। जल्द ही संक्रमीत हो जाता है। मुहँ-खुर रोग का इलाज के लिए मेथी, जीरा, प्याज और तील आँयल का उपयोग करते हैं।

मेथी में ट्राइगोनीलीन (Trigoneline), तील आँयल में कोलीन (Choline), सापोनीन (Saponin), और प्रोलीनीन (Prolinine) जैसे तत्व रहते हैं। ये तत्व घाव सुखाने में मदद करते हैं। जीरा मैं थाइमल (Thymol), थाइमिन (Thymine) का तत्व रहते हैं। प्याज मैं म्युसीलेज की तत्व होते हैं। ये तत्व घाव सुखाने में मदद करता है।)

बीमारी का लक्षण:-

- मुहँ और जीहवा में घाव
- मुहँ से लार निकलना
- बुखार का होना
- आहार खाने सें इनकार

बीमारी का कारण:-

- महँ-खुर वायरस
- अश्वच्छ वातावरण

बिमारी का चिकित्सा:-

- मेथी- ५० ग्राम
- जीरा- ५० ग्राम
- प्याज-५० ग्राम

प्याज

मथी

जीरा

मेथी, जीरा और प्याज को अलग अलग पीस कर मिलाया जाता है। उसके साथ ५० ग्राम् तील की ऑयल को मिलायें। पशु को खिलाया जाता है। दस दिनो तक खिलाने से मुहँखुर रोग का इलाज हो जाता है।

७) मुहँ-खुर-रोग (Food- and-Mouth Disease) -2

"मुहँ-खुर रोग की करो इलाज
केला, तील तेल करे कमाल"

गाय, भैंस, बकरी, भेड़ मैं मुहँ-खुर रोग दिखाई देता है। ये रोग वायरस के कारण होते हैं। वायरस के कारण इसका आधुनिक् चिकित्सा नहीं है। इसी कारण से मुहँ-खोर टीका देना जरुरी है। मुहँ- खुर के इलाज के लिए केला के साथ, तील का तेल इस्तेमाल किया जाता है।

पका केला में टानीक एसिड (Tanic Acid), गालीक एसिड (Galic Acid) और आलबुमीनएड्स (Albuminoids) तत्व होते हैं। ये तत्व घाव को सुखा देते हैं। तील की तेल में ट्राइगोनेलीन (Trigoneline), कोलीन (Cholin), सापोनीन (Saponin) ओर प्रोलामीन (Prolamine) तत्व होते हैं। ये तत्व कीटाणु की विनाश करते हैं।

बीमारी का लक्षण:-

- मुहँ और खुर में घाव।
- मुहँ से लार निकलना।
- बुखार और खाने से इनकार।
- दुध देना बंद या दुध में कमी।

बीमारी का कारण:-

- वायरस का संक्रमण

बीमारी का चिकित्सा:-

- गोशाला को चूना से सफाई करना
- पका केला-५
- तील तेल- १०० मीली

पका केला को पिस लें और तील तेल में मिलाकर दिन में एक बार ५ दिनों तक खिलायें।

डॉ बलराम साहु

(८) मुहँ-खुर रोग (Foot-and- Mouth Disease) -3

"मुहँ-खुर रोग बड़े नाम की
निम की छाल बड़े काम की।"

गाय भैंस भेड़ और बकरी में मुहँ खुर का रोग होता है। मुहँ-खुर एक वायरल की बीमारी है। इस रोग के लिए रोगप्रतिरोधक टीका लगाना जरुरी होता है। इसका इलाज के लिए पारंपरिक रुप से नीम की छाल और कटहल के पत्ता का इस्तेमाल होता है।

नीम पेड़ की छाल में जीवाणु और वायरल नाशक तत्व होते हैं। कटहल (Jackfruit) के पत्ता में भी घाव सुखाने का तत्व होता है।

बीमारी का लक्षण:-

- बुखार
- मुहँ से लार
- मुहँ और खुर में घाव
- खाना पिना बंद
- दुध देना बंद
- बैल काम नहीं कर पाता

बीमारी का कारण:-

- मुहँ-खुर का वायरस
- दुषित वातावरण

बीमारी का चिकित्सा:-

- कटहल का पत्ता -२०० ग्राम
- नीम की छाल- ३०० ग्राम

कटहल पत्ता

कटहल पेड

नीम

कटहल

दोनों को पीसकर ५ लीटर पानी में १ घंटा केलिए उबाला जाता है। और आधा पानी होने पर आग को बंद कर दिया जाता है। उस मिश्रण से आधा लिटर पानी, दिन में दो बार ३ दिनों तक पिलाया जाता है।

चर्म रोग

९) दाद, खाज, खुजली (चर्म रोग, Skin Disease)

"दाद, खुजली और खाज
अमलतास में करो इलाज "

दाद और खुजली पशुओं का चर्म रोग है। दाद और खुजली के कारण पशु चाटते रहते हैं। पशु उन जगाह को बार बार चाटते हैं। पारंम्परिक रुप से इंडियन लाबार्णम पेड़ (अमलतास) की पत्ता का उपयोग करते हैं। अमलतास (लाबर्णम) पत्ता का साथ हल्दी का भी उपयोग होता है।

इंडियन लबर्णम ट्री (अमलतास) के पत्ता में आन्थ्राक्विनोन (Anthraquinone), टानीन (Tanin), ग्लुटेन (Glutein) तत्व रहते हैं। ये तत्व दाद जुँ के उपर काम करते हैं। हलदी में कुरकुमीन (Curcumin), टरपिनएड़स (Terpinoids), जुभाबिएन् (Javabiane) जैसे तत्व रहते हैं। ये तत्व खुजली बंन्द करते हैं। एलर्जी जैसे परिस्थिति को बंद करते हैं।

बीमारी का लक्षण:-

- दाद।
- खुजली।
- लोम गिरता है।
- चमड़ी मोटा हो जाना।
- एकजिमा जैसी स्थिति का होना।

बीमारी का कारण:-

- फंगस संक्रमण
- कीड़े का संक्रमण

- शरीर में जुँ का संक्रमण
- कृमि

बीमारी का चिकित्सा:-

अमलतास

- एक मुट्ठी भर इंडियन लाबर्णम ट्री (अमलतास) की पत्ता को पिस कर के उसमे इतना ही परीमाण में हल्दी को मिलाकर एक पेस्ट बनाना है।
- ये पेस्ट को हर रात में एकबार ५ दिनो के लिये लगाना है।

२) कटा घाव (Lacerated wound)

"कटी हुइ घाव के करो इलाज
खलमुड़ीया और थोड़ी पीयाज "

पशुओं मै कटी घाव दुर्घटना से होता है। इस घाव का आधुनिक चिकित्सा है। लेकिन पारम्पारिक पशु चिकित्सा में खलमुड़ीया जैसे हर्ब का इस्तेमाल किया जाता है। घाव सुखने के लिए खलमुड़ीया *(Tridax procumbens)* का उपयोग पुरानी दिनों से प्रचालित है। इसके साथ प्याज का भी उपयोग होता है।

खल मुड़ीया में एकलीपटाइन (Acliptine), निकोटिन (Nicotine) जैसे तत्व रहते हैं। इस तत्व घाव सुखाने के लिए और जीवाणु बिरोधी रुप में काम करता हैं। प्याज में म्युसीलाज (Mucilase) तत्व होते हैं। ये पीड़ानाशक होता है।

बीमारी का लक्षण:-

- दुर्घटना के कारण घाव का होना।
- खेतो में बैल काम करते समय घाव का होना।
- खुन निकलना।
- घाव ज्यादा बड़ा हो जाना।

बीमारी का कारण:-

- दुर्घटना के कारण।
- जीवाणु संक्रमण।
- खुन निकलना।

बीमारी का चिकित्सा:-

- खलमुड़ीया का पता -१०० ग्राम
- प्याज -५० ग्राम

दोनो को पिस कर मिला देते हैं। घाव की उपर ये पेस्ट को लगा देते हैं। अगर घाव ज्यादा गहरा है तो इसके उपर एक बैंडेज लगा दिया जाता है। हर २४ घंटे के बाद इस लेपन को पुन: लगाना चाहिए।

प्याज

खलमुड़ीया

३) लासीरेसन, बृइस (छोटा घाव, Lacerated Wound) -2

"अपमार्ग और छोटा हलकुसा का पत्ता
चमड़ी घाव कि इलाज सस्ता "

पशुओं में छोटा मोटा घाव हो जाता है। शरीर के उपर भाग कि चमड़ी कट हो जाता है। इसके तुरन्त इलाज ग्रामांचल में हर्बल से हो जाता है। इसके लिए अपमार्ग और छोटा हलकुसा के पत्ता को इस्तेमाल किया जाता है।

अपमार्ग कि पत्ता में आलकालाइन पटास (Alkaline Potash), आचीरान्थाइन (Achiranthine), ओलीयोनिलिक एसीड़ (Oleonilic Acid), गालाकटोज और सापोनीन (Saponin) के तत्व रहते हैं। छोटा हल कुसा पत्ते में एसेनसीआल आँएल और आलकालएड़स होते हैं। ये चमड़ी कि घाव कि सुखा देते हैं। सोरीयासीस जैसे बीमारी इलाज कर देता है।

अपमार्ग

छोटा हलकुसा

बीमारी का लक्षण:-

- चमड़ी के उपर हलका घाव या बृइसेस
- चमड़ी के उपर का भाग निकल जाता है
- लाल रंग का हो जाता है
- खुन का लसा निकलते हैं

बीमारी का कारण:-

- दुर्घटना

बीमारी का चिकित्सा:-

- अपमार्ग पत्ता- ५० ग्राम
- छोटा हलकुसा पत्ता -५० ग्राम

दोने को पीस कर उसके उपर दिन में दो बार लगाएं। तीन दिनो तक लगाने से घाव सुख जाता है।

डॉ बलराम साहु

४) घाव में कीडे मकोड़े (Magotted Wound) -1

"कीड़े मकोड़े घाव में हुई
सीता फल की पत्ता का मलम लगाई "

पशुओं के घाव में कभी कभी कीड़े लग जाते हैं। ये कीडे बारीस के दिनो में ज्यादा दिखाई पड़ता है। साफ सुतर या परीमल कि अनुपस्थीती में ये किड़े मकोड़े होते हैं। इसके कारण घाव शुखते नही है। मकखीयों के संक्रमण से अंडा और लार्वा घाव में आते हैं। इससे कीड़े पैदा होते हैं। इसके चिकित्सा के लिए हर्बाल में एक पारम्परिक चिकित्सा है। इसमें एपल कसटार्ड (सीता फल) के पत्ते का इस्तेमाल किया जाता है।

कष्टर्ड एपल (सीता फल) के पत्ते में आमरफस आलकालएड़स (Amorphos Alkaloids) कीड़े विरोधी होते हैं। चमड़ा के उपर जुँ कि उपर भी असर पड़ता है।

बीमारी का लक्षण:-

- शरीर में घाव।
- घाव का नही सुखना।
- घाव के उपर कीड़े मकोड़े का होना।
- पशु का अशांत होना।

बीमारी का कारण:-

- पशुशाला में मक्खीयों की उपस्थिति।
- मक्खी घाव की उपर बैठते हैं।

- मक्खी से घाव में अंडे और लर्वा की उपस्थिति।
- कीड़े की बंश वृद्धि होती है।

बीमारी का चिकित्सा:-

- सीताफल का पत्ता -१०० ग्राम
- कपूर १० ग्राम् (३-४गोली)
- तंबाखु पत्ता - २० ग्राम

तंबाखु पत्ता

कपूर

सीताफल का पत्ता

सबको अलग अलग पिस कर एकठे मिलाकर एक पेस्ट बनाना है। पेस्ट घाव को साफ करके लगाने से रोग ठीक हो जाता है।

५) घाव में कीड़ा (Magotted Wound)- 2

"कीड़े मकोड़े घाव में हुई
बरुन पत्ता का मलम लगाई"

पशुओं के शरीर में घाव के कारण पशुओं में बैचेनी रहती है। ठीक से खाना पिना नहीं कर पाते हैं। घाव का आकार बढ़ जाता है। घाव में कीड़े लगने से घाव का सुखना नहीं हो पाता। इसलिये किसानों ने पारम्परिक पशु चिकित्सा का उपयोग करते हैं। बरुन पेड़ का छाल और कपूर का इस्तेमाल किया जाता हैं।

बरुन पेड़ के पत्ते में आलकालएड्स् तत्व रहते हैं। ये तत्व घाव सुखाते हैं। कीड़े को भी मार देते है। कपूर की उपस्थिति मक्खी को भगाता है। इससे घाव जल्दी भर जाता है।

बीमारी का लक्षण:-

- शरीर कि बाहरी भाग में घाव।
- घाव में कीड़े लग जाते हैं।
- घाव सुखता नही है।

बीमारी का कारण:-

- जीवाणु संक्रमण।
- घाव में मक्खी बैठते हैं।
- मक्खी से अंड़े और लार्वा आते हैं।
- लार्वा से कीड़ा बनता है।

बीमारी का चिकित्सा:-

- बरुन पेड़ का पत्ता - ५० ग्राम
- कपुर- ५-१० ग्राम् (३-४ गोली)

कपूर

बरुन पत्ता

पहले बरुन पत्ता को अच्छे तरीके से साफ कर पानी में धो देना चाहिए। इसके बाद पत्ता को पीस कर इसका पेस्ट बनाना चाहीये। २-३ कपुर या कांफर के गोली को चुर्ण के साथ ये पेस्ट मिला देना चाहिये। ये पेस्ट को दिन में दोबारा लगाना है। इसे ३-४ दिनों तक लगाना है।

६) टीक् और जुँ संक्रमण (Tick & lice Infestation)

"टीक् और जुँ खुन को चुसा
भैरु पत्ता गाए इलाज कि भाषा"

टीक् और जुँ की संक्रमण से पशुओं को बहुत परेशानी होती है। टीक और जुँ को बाह्यपरजीवी बोला जाता है। ये परजीवी खुन चुसते हैं। इससे शरीर में एनेमिया हो जाता है। पशुओं के शरीर कि वृद्धि नहीं हो पाती है।

FLEA

TICK

इष्ट इंडिया सटीन उड, भैरु *(Chloroxylon swietiana)* के पत्ते में आलकालएडस तत्व रहते हैं। ये तत्व किटाणु नाशक का काम करते हैं। ये टीक और जुँ को लकवा करके मार देते हैं।)

बीमारी का लक्षण:-

- शरीर में टीक और जुँ का होना।
- चमड़े के उपर घाव का होना।
- जुँ और टीक के कारण शरीर के खुन में कमी या एनेमिया।

बीमारी का कारण:-

- स्वछता का अभाव।

- पशुशाला में अस्वास्थ्यकर परिस्थिति।
- टीक की संवर्धन होने से।

बीमारी का चिकित्सा:-

भैरु

- ३ मुठी भर इष्ट इंडिया साटीन उड़ (भैरु) के पत्ते को लेकर अच्छी तरह धो देना चाहीए।
- पत्ते को पिस कर उसको कपड़े में निचोड़ दिया जाता है।
- इन रस को २ गुना पानी मैं मिलाकर पशु के शरीर के उपर लगाया जाता है। १घंटा के बाद नह्या देना चाहीए।

४) टिक और जुँ सक्रंमण (Tick and Lice Infestation)-2

"तम्बाखु के पत्ते बड़ी काम की
टिंक् और जुँ को भगा वहीं की।"

पशुओं में टिक् और जुँ का संक्रमण हानीकारक होता है। टिक् और जुँ खुन चुसते हैं। पशु शरीर में खुन कि कमी या एनेमिया दिखाई देता है। टिक् और जुँ का नियंत्रण के लिये किसान और पशु पालकों धुआँ या तम्बाखु पत्ते का इस्तेमाल करते हैं।

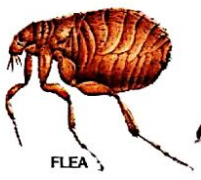

तम्बाखु के पत्ते में नीकोटीन (Nicotene), नीकोटेइन (Nicoteine), आनाबाशीन (Anabacin), टाबाकासीन (Tabacacin), आइसोक्वेरसीटीन (Isoqvencitrene) तत्व होते हैं। ये तत्व टीक और जुँ को मार देते हैं। चमड़ी से गिर जाते हैं।

बीमारी का लक्षण:-

- शरीर में खुजली होना
- टिक् और जुँ का संक्रमण

- शरीर में खुन की कमी
- शरीर कि चमड़ी रुखा सुखा लगता है

बीमारी का कारण:-

- टीक और जुँ का संक्रमण
- पशुशाला में टिक और जुँ की उपस्थिति
- पशुशाला में स्वछता का अभाव

बीमारी का चिकित्सा:-

- तम्बाखु के पत्ते को (३०० ग्राम) लेकर २ लीटर पानी में रात भर भिगोना है। सुबह होते हुए पानी में पत्ते को अच्छी तरह हाथ की सहायता से पीस कर मिलाना है। इसके बाद इस पानी को एक कपड़ा में छान कर के एक कपड़े कि सहायता से शरीर के उपर स्वापींग (Swaping) करना है। दो घंटे के बाद पानी में नही देना चाहिये। तम्बाखु पानी को लगाने की बाद पशुको छावं में रखना चाहीए। धुप में शरीर के हानी हो सकता हैं।

तंबाखु पत्ता

५) शरीर की चमड़ी में परजीवी का संक्रमण (Skin Infection)

"करंज की तेल अच्छा आया,
परजीवी को जल्दी भगाया"

पालतु पशुओं में परजीवी समस्या दिखाई देती है। शरीर के चमड़े में ये परजीवी दिखाई देते हैं। टीक् ,जुँ जैसे बाह्य परजीवी संक्रमण करते हैं। ये सब शरीर से खुन चुसते हैं। शरीर में एनेमियाँ, खुन कि कमी दिखता है। ग्रामांचल में इसकी चिकित्सा करंज के तेल से किया जाता है।

करंज कि तेल में आलकलएड्स् तत्व रहते है। कपूर के साथ ये कीड़े को मार देते हैं।)

बीमारी का लक्षण:-

- शरीर के चमड़ी में परजीवी का होना।
- खुजली और दाद होना।
- खुन की कमी या एनेमिया का होना।

बीमारी का कारण:-

- पशुशाला में अस्वास्थ्य कर वातावरण।
- गंदगी की वजह से परजीवी का जन्म।

बीमारी का चिकित्सा:-

- करंज का तेल- १०० ग्राम्
- नमक- १० ग्राम्
- कपुर- १० ग्राम

करंज का तेल

१०० ग्राम् करंज तेल में १० ग्राम् खाने का नमक ड़ालना है। इसके बाद १० ग्राम् कपुर को चुर्ण कर के इसमें अच्छी तरह मिलाना है। इस मिस्रण को शरीर के उपर लगाना है। दिन में एक बार तीन दिन लगाने से परजीवी का नियंत्रण होता है।

६) टीक् संक्रमण (Tick, Lice Infestation) - 3

"सरसों का पेस्ट जल्द बनाओ
टीक और जुँ तुरन्त भगाओ "

पशुओं में टीक् और जुँ का संक्रमण होता है। पशुशाला में साधारण स्वच्छता कि कमी होने से वहाँ टीक् संक्रमण दिखाई देता है। पशुओं के चमड़ी कि उपर टीक् और जुँ लगते हैं। खुन चुसते हैं। शरीर एनेमिया का शिकार हो जाते हैं। ग्रामांचल में किसानों ने सरसों बीज से पेस्ट बनाते हैं और इस्तेमाल करते हैं।

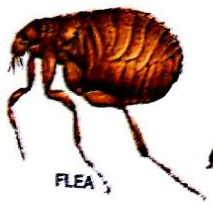

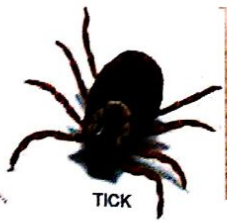

सरसों का बीज में आलकालएडस (Alkaloids), माइरोशीन (Myrosin), सीनीग्रीन (Sinigrin), की तत्व रहते हैं। ये तत्व टीक और जुँ के संक्रमण को बंद कर देता है।

बीमारी का लक्षण:-

- शरीर में टीक् और जुँ कि उपस्थिति।
- शरीर में एनेमिया या रक्त हीनता का होना।
- पशु में दुर्बलता का होना।

बीमारी का कारण:-

- अस्वच्छ वातावरण
- पशुशाला मैं टीक् और जुँ की उपस्थिति

बीमारी का चिकित्सा:-

२०० ग्राम् सरसों की बीज को पानी में भीगोया जाता है। बाद मे पीस कर इसका पेस्ट बनाया जाता है। पेस्ट को शरीर के उपर लेपन किया जाता है। ३-४ घंटा के बाद पशु को पानी से नहाया जाता है।

सरसों का पेस्ट

७) पशु की पुंछ में घाव (Gangrenous tail)

"गाय की पुंछ मैं अनेक घाव
सरसों कि पेष्ट पुंछ में लगाओ"

गाय और अनेक पशुओं की पुंछ के अग्रभाग में घाव होता है। ये घाव निचे से उपर संक्रमण करता है। पुंछ छोटे हो जाते है। खुन ओर नस निकलते हैं। घाव हो जाता है। ये घाव का चिकित्सा पारम्परिक उपाय से भी होता है। सरसों के बीज से बना हुआ पेस्ट बड़ा लाभकारी होता है।

सरसों कि बीज में आलकालएड़, माइरोसीन (Myrosin), सीनीग्रीन (Sinigrin), ब्रासीक एसीड़ (Brassic Acid) तत्व रहते हैं। ये तत्व जीवाणु नाशक होते हैं। घाव सुखाने में मदद करता है।

बीमारी का लक्षण:-

- पशुके पुंछ में घाव का होना
- घाव पुंछ के नीचे से शुरु हो कर उपर तक संक्रमण करते हैं
- पुंछ छोटे हो जाते है।

बीमारी का कारण:-

- पुंछ में घाव और जीवाणु संक्रमण
- फंगस का संक्रमण
- अस्वच्छ वातावरण

बीमारी का चिकित्सा:-

२०० ग्राम् सरसों के बीज को २-३ घंटे भीगो कर पिस दिया जाता है। ये पेस्ट को रात भर रखा जाता है। सुबह में पुँछ को अच्छी ...ी में साफ कर के प्रत्येक दिन एक ... लगाने से घाव ठीक

सरसों का पेस्ट

८) चमड़ी में एलर्जी (Skin Allergy)

"एलर्जी आया चमड़ी उपर
सहजन पत्ता में काम अपार"

पशुओं कि चमड़ी में एलर्जी होता है। लाल रंग कि दाद जैसे होता है। खुजली होता है। कभी कभी ज्यादा दिन तक खुजली होता है। ये एलर्जी के कारण होता है। पशुओं को चराने वक्त चारा में कुछ ऐसे तत्व आते हैं, जो एलर्जी करता है। इसका चिकित्सा सहजन के छाल से किया जाता है।

सहजन के छाल में मोरींजीन (Moringene), मोरीन्जीनीन (Moringinine), और एसेनसीयाल आँएल की तत्व रहते हैं। ये तत्व हतपिडं और खुन का काम बढ़ाता है।

बीमारी का लक्षण:-

- शरीर के उपर चमड़ी में कांटा जैसा दिखई देता है।
- विच्छु जैसा अनुभव होता है।

बीमारी का कारण:-

- एलर्जी होता है।
- जीवाणु का संक्रमण से होता।
- कृमि की उपस्थिति।

बीमारी का चिकित्सा

सहजना

- सहजना की छाल को पीसकर पेस्ट बनाया जाता है। इस पेस्ट को एलर्जी के स्थान पर लगाया जाता है।
- हर दिन एक बार, ३-४ दिनो तक सहजन के पत्ता को लेकर पेस्ट भी बना जा सकता हैं।

९) चमड़ी में एलर्जी (Skin Allergy)-2

"चमड़ी उपर एलर्जी देखो
दही और तेल मिलाके माखो"

पशुओं की चमड़ी में एलर्जी होता है। खुजली भी होता है। लाल रंग हो जाता है। कभी कभी कीड़े जैसे छोटे छोटे वार्म दिखता है।
पारंपरिक तरीको से इसका इलाज दही और कैस्ट्रॉल आँएल (अरंड़ी की तेल) के साथ मिलाकर किया जाता है।

दही में आरएन्ऐज एनजाइम होता है। वह कीटाणु नाशक होता है। शरीर में कृमि होते हैं। तो दही के माध्यम से इलाज होता है। कैस्ट्रॉल आँएल में रीसीनीन (Recinine) तत्व होता है। पशुअें की आंतनाली जीवाणुओं को नास करते हैं। शरीर में जीवाणु, कीटाणु रहने से एलर्जी होता है।

बीमारी का लक्षण:-

- पशु की शरीर में लाल रंग की दाद होना।
- चमड़ी मैं खुजली होना।
- कभी कभी शरीर में पीड़ा का होना।

बीमारी का कारण:-

- शरीर में कृमी।
- आंतनली में जीवाणु संक्रमण।
- खाध के कारण।

बीमारी का उपचार:-

- दही के साथ समान मात्रा में (कैस्ट्रॉल आँएल) अरंड़ी तेल मिलाकर शरीर में लगाया जाता है
- एक ग्लास दही में ५-६ चम्मच नमक मिला कर पिला देने से एलर्जी ठीक होता है।

१०) ट्युमर / फोड़ा (Tumor)

"फोड़ा का ब्यथा बहुत लगा
कुचला फल मैं उसको भगा"

पशुओं के शरीर में ट्युमर हो जाता है। ट्युमर कहीं भी हो सकता है। बैल के कंधा में यह ट्युमर दिखाई देता है। शरीर के उपर भाग में ये ट्युमर कभी कभी बड़ा हो जाता है और दर्दनाक होता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में इसका इलाज हर्वल उपाय से किया जाता है। इसके लिए कुचला *(Strichnus noxvomica)* फल का इस्तेमाल होता है। ये तत्व स्नायु या नर्भ टनीक के रुप में काम करता है। ये तत्व घाव सुखाने में भी मदद करते हैं। काष्टर की आँएल (अरंड़ी तेल) का भी इस्तेमाल किया जाता है। कैस्ट्रॉल के आँएल में रिसीनीन (Ricinine), रिसीन (Ricin), और टक्सआलबुमीन (Toxalbumin) तत्व रहता है। ये पीड़ा को कम कर देते हैं।

बीमारी का लक्षण:-

- शरीर के उपर ट्युमर या सुजन।
- ट्युमर पीड़ादायक।
- पीड़ा के कारण बैल काम नहीं कर पाता है।
- बैल के कंधे पर ट्युमर होने से घाव, पीड़ा और काम में कमजोरी।

बीमारी का कारण:-

- जीवाणु संक्रमण।
- शरीर में कृमि की उपस्थिति।
- बैल के कन्धा में बार बार चोट (Injury) लगना।

बीमारी का चिकित्सा:-

- कुचला फल को छील कर, पीस कर इसका पेस्ट बनाना होता है।
- २०० ग्राम् कुचला फल को पीस कर उसमे १०० ग्राम् अरंड़ी तेल ड़ाल कर मिलाया जाता है। ये पेस्ट को ट्युमर के उपर लगाया जाता है। हर दिन दो बार, लगाया जाता है।

कुचला फल

अरंडी तेल

११) चमड़ी के अन्दर खुन (हीमाटोमा, Haematoma)

"चमड़ी के अन्दर ठुल खुन की
इमली की पता बड़े कामकी"

पशुओं के शरीर में मार या दुर्घटना की बजह से मांस मे खुन का प्रवाह होता है। खुन इकठ्ठा होकर चमड़ा के निचे जम जाता है। इसको अंग्रेजी में हीमाटोमा कहते हैं। हीमाटोमा के कारण वह स्थान लाल रंग हो जाता है। सुजन हो जाता है। यह बहुत पीड़ा दायक होता है।

इस बिमारी की चिकित्सा इमली की पत्ता और हल्दी से किया जाता है। इमली की पत्ता मैं टारटारीक आंएल (Tartaric oil), टरपिनएड़स (Terpenoid), और जुभाबिएन (Juvabiene) तत्व रहते हैं। ये सब तत्व शीतल कारक, जिवाणु नासक, और प्रदाह विरोधी के रुप में काम करते हैं।

बीमारी का लक्षण:-

- चमड़ी के नीचे खुन का जमाव
- पीड़ा की अनुभव
- वह स्थान लाल रंग का हो जाता है
- सुजन का होना।

बीमारी का कारण:-

- दुर्घटना या चोट
- मांसपेसी में क्षति
- अधीक ठंड या गर्मी के कारण

बीमारी का चिकित्सा:-

- इमली की पत्ता -२०० ग्राम् लेकर पीस कर एक पेस्ट बनाना है। इस पेस्ट में २० ग्राम् हल्दी का पाउडर मिला दिया जाता है।
- इस मिश्रण के पेस्ट को होमाटोमा की स्थान पर दिन में दो बार तीन दिनों तक लगाना है।
- इससे पिड़ा की कमी महसुस होगा।
- खुन की जमाव अपने आप सुख जाएगा।

इमली की पत्ता इमली हल्दी

शरीर में पीड़ा एवं हड्डी की समस्या

१) बैल के कंधा/कूबड़ मे पीड़ा (Pain in Hump / Shoulder)

"बैल की कंधा में बड़ी पीड़ा
हेना पत्ता पीड़ा को मारा"

बारिश के दिनों में बैल के शरीर मे पिड़ा होता है। शहर में बैल की गाडी से सामान परिवहन किया जाता है। भारी वजन के कारण कंधा में क्षत, घाव और पिड़ा महसुस होता है। कंधा की इस घाव की चिकित्सा के लिए मंजीष्ठा (हेना) की पत्ता का उपयोग होता है। मंजीष्ठा (हेना) का पत्ता मे हीमाटोनीक एसिड (Himatonic Acid), रीसीन (Ricin) तत्व रहता है। ये तत्व पीड़ा नाशक और जिवाणु नाशक हैं।

बीमारी का लक्षण:-

- बैल की कंधा में पीड़ा।
- बैल काम करने में अक्षम।
- बैल की कंधा के उपर घाव, मक्खियों से परेसानी।

बीमारी का कारण:-

- चोट या क्षत के कारण
- कृमि का संक्रमण
- मक्खि के माध्यम से फैल सकती है।

बीमारी का चिकित्सा:-

२०० ग्राम् मंजीष्ठा के पत्ता को पीस कर हलका सा गरम किया जाता है। उस गर्म पेस्ट बैल के कंधा उपर लगाया जाता है। दिन में दो बार पांच दिनो तक लगाया जाता है।

हेना

२) शरीर में पीड़ा (Body Pain)

"अंग अंग में पीड़ा आये
कुचला फल की मलम लगाये"

पशुओं के शरीर में दर्द या पीड़ा होता है। इसके प्रभाव में पशु काम नहीं कर पाते हैं। बैल खेती में काम नहीं कर पाते हैं। बारिश के दिनों में ये ज्यादा दिखाई देता है। शरीर का पीड़ा को दूर करने के लिये पारम्पारिक चिकित्सा किया जाता है।

कुचला की फल और काष्ट्र ऑयल (Castor oil) (अरंड़ी तेल) का इस्तेमाल किया जाता है। कुचला फल में स्ट्रीक्नीन जैसे तत्व रहते हैं। काष्ट्र ऑयल (अरंड़ी की तेल) में रिसीनीन (Ricinin), रिसीन (Ricin) और टकसआलबुमीन (Toxalbumin) तत्व है। ये सब तत्व स्नायु या नर्भ टनीक के रुप में काम करते हैं।

बीमारी का लक्षण:-

- शरीर में पीड़ा
- पशु चलने में अक्षम
- बैल काम कर नहीं पाते
- पैर में लंगड़ापन

अरंडी तेल

बीमारी का कारण:-

- शरीर में कमजोरी
- अधीक ठंड के कारण
- चोट

कुचला फल

बीमारी का चिकित्सा:-

- कचा कुचला फल को काट कर उसका मांस निकाल कर, एक लीटर कैष्ट्रोल ऑयल मे भीगोकर ३ दिन तक धुप में रखा जाता है। उस तेल से मालीस कीया जाता है।
- हर दिन में दो बार, ३ दिनो तक लगाया जाता है।

३) घुटना में दर्द (Knee Pain)

"घुटने में दर्द, चल ना पाये पशु
घृतकुमारी और हल्दी सफल प्रासु"

पशुओं की घुटन में दर्द होने से पशु चल नहीं पाता। बैल खेती में काम नहीं कर पाता। बारीस के दिन में वायरल फिवर या एफिभाराल फिवर के कारण से शरीर में पीड़ा होता है। इसका पारम्परिक चिकित्सा के लिये घृतकृमारी के रस के साथ हल्दी से मालिस किया जाता है।

घृतकुमारी में आलोइन (Aloin), एमोड़ीन (Emodin), काइसेफानिक एसीड़ (Chrysopanric Acid), बिटा बारबोलीन (Beta Barbolin), जैसे तत्व रहते हैं। हलदी में कुरकुमीन (Curcumin), टरमेरीक आएल (Turmeric oil) तत्व रहता है। हल्दी ओर घृतकुमारी का मिश्रण शरीर की स्नायु अथव नर्व के काम में सुधार लाता है। इस लिये पीड़ा के महसुश कम हो जाता है।

घृतकुमारी

बीमारी का लक्षण:-

- पैर में ठीक से चल नहीं पाता
- शरीर में पीड़ा
- खाने में रुची नहीं रखता
- बैल खेती में काम नहीं कर पाता है
- दुध की उत्पादन में कमी

बीमारी का कारण:-

- वायरल संक्रमण
- बारिश में भिगने से

बीमारी का चिकित्सा:-

चार चम्मच घृतकुमारी के रस के साथ इसकी आधा अर्थात् दो चम्मच हल्दी मिला कर एक पेस्ट बनाया जाता है। इस पेस्ट को पीड़ा के स्थान पर दिन में दो बार लगाया जाता है। ऐसा पाचं दिनो तक किया जाता है।

४) हड्डी टुटने से (Bone Fracture)

"हड्डी जब टुटे गाय चल् ना पाए
हाड़जोड़ पत्ता की मलहम लगाऐं"

हड्डी टुटने से पशु का चलना फिरना बंद हो जाता हैं। कभी कभी पेरों की हड्डी संपुर्ण टुट जाता हैं। इसका इलाज के लिए हमारे ग्रामांचल में एक पारम्परिक चिकित्सा का उपयोग होता है।

इसलिये हाड़जोड़ की पत्ता को पिसकर उसका पेस्ट को टुटने के स्थान पर लगाया जाता है। उसके उपर प्लास्टर या बैंडेज लगाया जाता है।

हाड़जोड़ की पत्ते में कारोटीन एसिड (Carotine Acid), आस्क्रबीक (Ascorbic Acid) एसीड़, और क्यालसीयम आकोनेट (Calcium Aconate) तत्व होते हैं। ये सब तत्व मांसपेसी में पीड़ा को कम करते हैं। घाव सुखने में मदद करता है।

बीमारी की लक्षण:-

- हड्डी टुट जाता है
- पशु चल नहीं पाता
- चलने में दिक्कत
- काम करना बंद
- दुध देना बंद

बीमारी का कारण:-

- दुर्घटना या चोट

हाडजोड

बमारी का चिकित्सा:-

हाडजोड पत्ता को अच्छी तरह पिस दिया जाता है। इस पेस्ट को हड्डी टुटने के स्थान पर लगा कर कपड़ा का बैंडेज लगा दिया जाता है। इस बैंडेज को २० दिनो तक लगाकर रखा जाता है।

२० दिन तक के बाद प्लास्टर को खोल दिया जाता है।

डॉ बलराम साहु

५) बिच्छू काटने पर उपचार (Scorpion Biting)

"बिच्छू काटने से होता है दर्द
अरवी का रस लगाएं जल्द।"

मक्खी, बिच्छू काटने से जलन और दर्द महसुस होता है। मक्खी और बिच्छू के दंशन से एसिड जैसे पदार्थ शरीर के अंदर आ जाता है। इससे जलन होता है।

अरबी का पत्ता का रस या कांडकि रस में आलकालाइन (Alkaline) तत्व रहता है। ये तत्व क्षारीय होता है। ये जलन को कम कर देता है।)

बीमारी का लक्षण:-

- खुजली।
- जलन।
- घाव का हो जाना।

अरवी कि पत्ता

बीमारी का कारण:-

- मक्खी दंसन
- बिच्छू दंसन

बीमारी का चिकित्सा:-

१- एक अरबी पता को लेकर उसका कांड़ से रस निकाल के काटने के स्थान पर लगाने से जलन कम होता है।

२- दंशन के स्थान पर वेकींग पाउडर या खाने का सोड़ा का उपयोग करने से जलन बंद होता है।

गाय में दुध बढाने का उपाय

१) दुध में वृद्धि के उपाय (Increase in milk yeild)- 1

"कद्दु की सलाड़ बड़े काम की
दुध बढ़ा दे सालो साल की"

गाय का दुध देना, खाने पिने के उपर निर्भर होता है। गाय की दुध अमृत समान होता है। इसलिये दुध स्वास्थ्यप्रद होता है। पारंपरिक रुप से दुध बढ़ाने के लिये कद्दु का इस्तेमाल करते हैं। कद्दु में आसकरबिक एसिड (Ascorbic Acid), विटामिन बी (Vitamin B), और आलकलएड़स (Alkaloids), तत्व रहता है। ये सब तत्व दुध बढ़ाने का काम करते हैं।

बीमारी का लक्षण:-

- गाय दुध नहीं या कम देती है

बीमारी का कारण:-

- शरीर में हर्मोन की क्षमता में कमी।
- खाने में हर्मोन बनाने वाले पदार्थ की कमी।
- बुखार।

काली नमक

बीमारी का चिकित्सा:-

५०० ग्राम कद्दु को छोटे छोटे काट दिया जाता है। उस में ५० ग्राम् काली नमक मिलाकर हर दिन एक बार एक महीना के लिये खिलाया जाता है।

कद्दु

२) दुध बढ़ने का उपाय (Incerease in milk yeild)-2

"गुड़, चावल और उरहर लाओ
दुध की क्षरण ओर बढ़ाओ"

खाने पीने के उपर दुध देने की क्षमता निर्भर करता है। इसके अलावा शरीर में हार्मोन के कमी से भी दुध कम हो जाता है। हर्बल रुप से इसका इलाज गुड़, चावल और अरहर दाल से करते हैं।

गुड़ या मोलासेस (Molasses) स्वास्थ्य बर्धक होता है। अरहर दाल में प्रोटीन तत्व रहता है। दुध क्षरण के लिये काम देता है।

बीमारी का लक्षण:-

- दुध में कमी
- गाय का स्तन छोटा दिखता है

बीमारी का कारण:-

- हार्मोन की कमी
- प्रोटीन की कमी

बीमारी का चिकित्सा:-

- अरहर दाल- २५० ग्राम
- चावल- २५० ग्राम
- गुड़- १०० ग्राम

अरहर

चावल

गुड़

चावल और उरड़ दाल को पानी में भिगोकर आग में पकाया जाता है। उसमें १०० ग्राम् गुड़ मिलाया जाता है। उसमें १ ग्राम् पिपल का चुर्ण ड़ाल कर हर दिनो में एक बार १५ दिनो तक खिलाया जाता है। इस से दुध देने की क्षमता बढ़ जाता है।

३) दुध में बृद्धि के उपाय (Increase in milk yeild)-3

"इमली बीज का चुर्ण बनाऐं
दुध की गंगा और बढ़ाऐं"

गाय की दुध देने की क्षमता खाने पीने के उपर निर्भर करती हैं। अच्छा खाना खिलाने से अनेक लाभ मिलता है और दुध बढ़ती है। लोकिन कभी कभी अच्छा खाने पीने के बावजुद दुध नहीं बनता। हार्मोन की कमी इसका मुख्य कारण है। बाजार में सिंथेटीक हार्मोन तो मिलती है। परन्तु इसका साइड इफेक्ट भी होता है। इसलिये हर्बल हार्मोन या फायटो हार्मोन का इस्तेमाल कीया जाता है।

इमली की बीज में आकालएड़ तत्व रहता है। ये तत्व जीवाणु और कृमि नाशक और फाइटो हार्मोन के रुप में काम करती हैं और दुध बढ़ाने में सहयोग करते हैं।

बीमारी का लक्षण:-

- दुध की कमी
- अच्छा आहार खिलाने के वावजुद दुध में कमी

बीमारी का कारण:-

- हार्मोन में कमी।
- कृमि की उपस्थिति।
- जीवाणु संक्रमण।

बीमारी का चिकित्सा:-

इमली के बीज आधा किलो लेकर अछी तरहे चुर्ण बनाया जाता है। इस चुर्ण से १०-१५ ग्राम् और ५० ग्राम् गुड़ के साथ मिलाकर प्रत्येक दिन एक बार एक महीना के लिये खिलाया जाना है। इस चुर्ण को खाना के साथ भी दिया जा सकता है।

गुड़

इमली की बीज

इमली

४) दुध बढ़ाने का उपाय (Increase in milk yeild)-4

"कापास का बीज, उरद दाल
दुध उत्पादन किया कमाल।"

गाय में दुध वढ़ाने के लिये हर्वल उपाय का अच्छा योगदान है। कापास के बिज और उरद की दाल को पशु को खिलाया जाता है।

कपास की बीज में आवश्यक एमिनो एसिड (Essential Amino Acid) उरद की दाल में प्रोटीन (Protein) तत्व रहता है। ये तत्व दुध वढ़ाने का काम करते हैं।)

बीमारी का लक्षण:-

- दुध कम होना।
- दुध बंद हो जाना।

बीमारी का कारण:-

- खाने में कमी।
- हार्मोन में कमी।

बीमरी की चिकित्सा:-

- कपास का बीज- २०० ग्राम
- उरद का दाल- २०० ग्राम

दोनो को चुर्ण करके हर दिन ५०ग्राम् नमक के साथ एक महीना खिलाने से दुध उत्पादन बढ़ जाता है।

उरद का दाल

कपास का बीज

कपास

५) दुध बढ़ाने का उपाय (Increase milk yield)- 5

"गाय की बढ़ाओं दुध उत्पाद
लउकी और गुड़ को खिलाओ जल्द्"

दुध अमृत की धारा होती है। गाय की दुध पुष्टीयुक्त होता है। दुध का उत्पादन बढ़ाने के लिये लउकी और गुड़ का इस्तेमाल किया जाता है।

लउकी में एसकोर्बिक एसिड (Ascorbic Acid), जुबाबीएन् (Juvabiane), और आलकालएड्स् (Alkaloids) जैसे तत्व होते हैं। ये सब तत्व दुध के क्षमता को बढ़ाबा देते है।

बीमारी का लक्षण:-

- दुध कम होना।
- स्तन सुख जाना।

बीमारी का कारण:-

- हार्मोन में कमी।
- आहार में कमी।

बीमारी का चिकित्सा:-

एक् हरा लउकी (५०० ग्राम- १ किलो) को लेकर उसको छोटे छोटे काट कर १०० ग्राम् गुड़ या जागोरी और ५० ग्राम् नमक के साथ मिलाया जाता है। दिन में एक बार १ महीना तक खिलाया जाता है। इससे दुध बढ़ती है।

लउकी

गुड़

६) दुध बढ़ाने का उपाय (Increasing Milk)- 6

“दुध बढ़ाने का अच्छा तरीका
चना, चावल, गुड़ और उरद का”

गाय का दुध बढ़ाने के लिये सुशम खाद खिलाना जरुरी है। कभी कभी अच्छा खाना मिलने के बाद भी दुध नहीं मिलती। इसलिये फुड़ सपलीमेंट की जरुरत होता है। ये सब न्युट्रीस्युटीकालस् की अंतर्गत होते हैं। उरद, गुड़ और चावल के मिश्रण से अच्छे दुध उत्पादन होता है।

चने का दाना से प्राटीन, चावल से कार्बाहाइड्रट और गुड़् से एनर्जी मिलता है।

बीमारी का लक्षण:-

- दुध कम् होना
- खाने से शक्ति ना मिलना

बीमारी का कारण:-

- प्रोटीन में कमी
- शक्तियुक्त आह्नार का न मिलने से

बीमारी का चिकित्सा:-

- चना-२५० ग्राम
- चावल- २५० ग्राम
- गुड़- १०० ग्राम

इन तिनो को पानी में भिगों कर आग में पकाया जाता है। इसमे १० ग्राम् पिपल की चुर्ण और १०० ग्राम् नमक ड़ाल कर हर दिन एक बार खिलाना है। इससे दुध बढ़ती है।

स्वास्थ्य वर्द्धक टॉनिक

१) स्वास्थ्य वर्द्धक टॉनिक (Health Tonic)

"अस्वगंधा जड़ बड़े काम की
टॉनिक का काम करे गाय की"

पशु शरीर का तंदरुस्ती के लिये अच्छा खाना के साथ औषधि का व्यवहार होता है। ग्रामीण अचंल में पारम्परिक तरीके से हर्बल टॉनिक बनाया जाता है।

हर्बल टॉनिक बनाने के लिये अस्वगंधा के जड़ का इस्तेमाल होता है। अस्वगंधा की जड़ में सोमीनीफेरीन (Sominipherin), आलकालएड्स् (Aalkaloids), फाइटोस्टेरोल (Phytosterol) जैसे तत्व रहते हैं। ये सब तत्व स्वास्थ्यबर्धक, रुचि बर्धक और पेट की बीमारी दूर करता है।

बीमारी का लक्षण:-

- खाने में कमी।
- शरीर दुर्बल।
- खाने में रुचि नही।
- दुध में कमी।
- शरीर में कृमि की उपस्थिति।
- जीवाणु संक्रमण।

चीरायता

बीमारी का चिकित्सा:-

- अश्वगंधा की जड़- ५०० ग्राम
- चीरायता -५० ग्राम

दोनो को अलग अलग पिस कर इकठ्ठा मिलाया जाता है। हर दिन खाने के साथ इससे २० ग्राम् चुर्ण खाने के लिए दिया जाता है। बकरी और भेड़ के लिए १० ग्राम् हर दिन एक महीना तक दिया जाता है।

२) पंच गब्य (Panchgavya)

"पंच गब्य में शरीर सुस्थ
आसमान से झरे अमृत्"

पशुओं को स्वास्थ्य रखने के लिए हर्बल और पारंपरिक टॉनिक दिया जाता है। इस में पंचगव्य एक बड़ा काम का टॉनिक है। ये शरीर का रोग प्रतिशेधक के गुण को बढ़ाता है।

पंचगब्य बनाने के लिये गाय का गोबर, मुत्र, दुध, दही, घी, गन्ने का रस, केला और टड़ी का इस्तेमाल किया जाता है।

गन्ने के रस मे साकरिन (Sacharine), कालसीयम अकजालेट (Calcium Oxalate), अकजालेट तत्व होता है। वो तत्व शक्तिप्रदायक होता है। केला मे टनिक एसिड़ (Tanic Acid), गालिक एसिड़ (Galic Acid), आलबुमिनएड़स (Albuminoids) तत्व होते हैं। टड़ी मे आलकोहोल पाया जाता है। ये सभी तत्व पुष्टिकारक और टॉनिक के रुप मे काम करते हैं।

बीमारी का लक्षण:-

- कृमि के कारण दस्त
- पेट खराब
- दुर्बलता
- काम मैं मन नहीं लगता
- गाय के दुध कम हो जाना

बीमारी का कारण:-

- कृमि
- जीवाणु संक्रमण

बीमारी का चिकित्सा:-

- गाय का गोबर - १ किग्रा.
- गाय का मुत्र - ७८० मिली
- गाय का दुध- ५०० मिली
- गाय का घी- २५० मिली
- गन्ना का रस- ७८० मिली
- पका केला- ३
- दडी- ५०० मिली

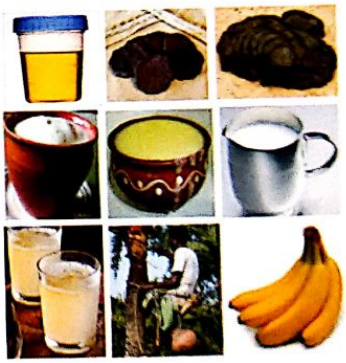

गाय के गोबर और घी को मिला कर छावं मै तीन दिन सुखाया जाता है। उसके बाद् एक बड़े मिट्टी के पात्र में और सब चिजों को मिलाया जाता है और ढंकन में बन्द किया जाता है और छावं में रखा जाता है। दिन में दो बार मिश्रण को मिलाया जाता है। इसे सात दिन रखा जाता है।

गाय के लिये - २०० मिली प्रत्येक दिन
बकरी और भेड - १०० मिली प्रत्येक दिन खिलाया जाता है
मुर्गि - ५ मिली प्रत्येक दिन पिलाने से तन्दरुस्ती हो जाता है।

३) स्वास्थ्य प्रद टॉनिक (Health Tonic)-2

"दुर्बल गाय को करो सबल
पुनर्नभा की पत्ता अतुल्य"

गाय का सेहत अच्छा रहने से दुध देने की क्षमता बढ़ती है। ग्रामीण इलाके में गाय के सेहत अच्छा होने के लिए किसान भाइयों ने एक प्रकार की हर्बल टॉनिक को प्रस्तुत करते हैं। ये टॉनिक पुनर्नभा की पत्ता और घृतकुमारी की जड़ से बनती है। पुनर्नभा की पत्ता में सापोनीन (Saponin) और पुनेमारीन (Punemarine) के तत्व रहता है। ये तत्व पीड़ानासक और पेट में खाद हजमी करते हैं। घृतकुमारी का जड़ में आलोइन (Aloin), एमोडीन (Emodin), क्राइसोफानीक एसीड़ (Chrysophanic Acid) और आइसोबारवोलीन (Isobarbolin) जैसे तत्व रहते हैं। ये सभी तत्व खाद्य हजम कारक और भुख बढ़ाने में काम करते हैं।

बीमारी का लक्षण:-

- खाने में रुची का कम।
- दुध में कमी।
- शरीर दुर्बल होना।
- शरीर के चमड़ी और बाल में रुखापन।

बीमारी का कारण:-

- कृमि
- बुखार
- जीवाणु संक्रमण

बीमारी का चिकित्सा:-

- पुनर्नभा का पत्ता - १०० ग्राम
- जीरा - ५० ग्राम
- घृतकुमारी का जड़ - १०० ग्राम
- नीम का तेल - १०० मिली

ये सबको अछी तरह साफ करके पीसा जाता है। इसके बाद सबको मिलाकर उसमें १०० मिली नीम का तेल मिलाये। इससे एक लड्डु बनाकर दिन में एक बार खिला देना चाहिये। इसे तीन दिन खिलाना है।

पुनर्नभा

जीरा

घृतकुमारी का जड़

नीम का तेल

४) बैल के लिये एक विशेष टॉनिक
(Special Fermented Tonic for Bullocks)
"बैल के लिये विशेष खाद्य
शताबरी जड़ बढ़ाए श्वाद"

ग्रामांचल में पारंम्परीक प्रणाली में पशुओं केलिए किण्वित खाद्य पदार्थ (Fermented Food) बनाया जाता है। ये खाद्य शरीर को शक्ति देता है। घर की बची हुई खाद्य, फल, और सवजी को पिस कर बनाया जाता है। इससे थोड़ा शराब भी बनती है।

ये टॉनिक को बनाने के लिये शताबरी के जड़ का उपयोग होता है। शताबरी के जड़ में आस्पाराजीन (Asparagine), म्युसीलेज (Mucilage), साकारीन (Sacarine) जैसे तत्व रहते हैं। ये सब तत्व टॉनिक, कृमि नाशक, पीड़ा निवारक और दस्त को बंद करत हैं। इसमे उरद दाल का भी इस्तेमाल होता है।

बीमारी का लक्षण:-

- शरीर का दुर्बलता
- खाने में रुचि कम होना
- काम करने केलिए अक्षम

बीमारी का कारण:-

- कृमि
- साधारण रुप मे अस्वस्थ
- ज्यादा ठंड या गरमी से

बीमारी का चिकित्सा:-

- शताबरी की जड़ - ५०० ग्राम
- उरद दाल (पानी में भीगोकर)- २५०ग्राम
- चावंल - ५०० ग्राम
- गुड़- २०० ग्राम

चावल

उरद दाल

शताबरी की जड़

ये सब पदार्थ को लेकर एक मिट्टी के पात्र में रखा जाता है। इसमें २०० ग्राम् सताबरी जड़, २०० ग्राम् दही, और २ लीटर पानी मिलाकर मिट्टी के पात्र को अच्छी तरह ढक दिया जाता है जैसे कि अंदर में वायु प्रवोश न कर सके। एक महीना के बाद इससे ये पाचक रस आता है। ये स्वास्थ्यप्रद होता है। हर दिन २०० मिली १ महीना तक पिलाया जाता है।

५) खुन की कमी (Anaemia, रक्तहीनता)

"घाव से खुन की क्षरना
दुब की घाश से खुन भरना"

पशुओं में खुन की कमी या एनेमिया दिखाई देता है। ये एनेमिया की बीमारी कई कारणो से होता है। दुर्घटना, कृमि के कारण से खुन की कमी हो जाता है। खुन कमी को दूर करने के लिए दुब घास की जुस पिलाना पड़ता है।

दुब घास में सइनीड़ोन (Cynidone), आलकालएड़ (Alkaloids) जैसे तत्व होते हैं। ये तत्व लोहासार देता है। खुन बढ़ने के लिए मदद करता है।

बीमारी का लक्षण:-

- एनेमिया या खुन की कमी
- दुर्बलता
- खाने में रुचि का कमना
- दुध में कमी

बीमारी का कारण:-

- दुर्घटना में खुन निकलने से
- कृमि की उपस्थिति

बीमारी का चिकित्सा:-

२५० ग्राम दुब घास को अच्छी तरह धो ले। घास को पीस कर अछा पेष्ट बना कर कपड़े में नीचोड़े। दुब की रस में ५० ग्राम् गुड़ या जागोरी मिलाये। एक कप जुस हर दिन एक बार एक महीना तक पीलाये। एनेमिआ की स्थिति में सुधार आयेगी।

६) स्वास्थ्य रखने के लिए टॉनिक (Heath tonic)

"हींगं और हरीद्रा करे कमाल
स्वस्थ्य गाय, बछड़ा और बैल।"

गाय के स्वास्थ्य अच्छा होना चाहिये। इस के लिए अच्छे आहार पुरक सपलीमेन्ट (Feed Suplement) का उपयोग होता है। ये परिपूरक आहार प्राकृतिक तरिको से बनाया जा सकता है। इस के लिए हींग, काली मीर्च, आजबाइन और हरीद्रा का उपयोग होता है।

हींग में आलकालएड़स (Alkaloids), हरीताकी (हरीद्रा) में चेबुलीक (Chebulic Acid), मालिक एसीड (Mallic Acid), आलजीक एसीड (Allegic Acid), रसीन (Resin), टानीन (Tanin), आन्थ्राक्वीनोन (Anthraquinone), काली मीर्च में पाइपरीन (Piperene), पाइपरीड़ीन (Piperidine), जैसे तत्व होते हैं। ये सब तत्व स्वास्थ्य वर्धक होते हैं ।

बीमारी का लक्षण:-

- शरीर दुर्बल होना।
- खाने में रुचि का कम जाना।
- दुध में कमी होना।

बीमारी का कारण:-

- आहार की कमी।
- जीवाणु संक्रमण।
- खाद्य पचने में दिक्कत।

ारी का चिकित्सा:-

- हींग-१० ग्राम
- काली मिर्च - १० ग्राम
- आजवाईन - १० ग्राम
- हरीताकी - २० ग्राम
- अदरख - २० ग्राम

अदरख

कालीमिर्च

हींग

आजवाइन

हरीताकी (हरीद्रा)

सब पदार्थ को अलग अलग पिसकर इकट्ठे मिलाकर दिन में एक बार, ५ दिनों तक खिलाया जाता है। इसे शरीर की तंदुरस्ती बढ़ जाती है।

७) बैल के लिए खाद्य परिपूरक फुड सप्लीमेंट (Feed Suppliment for Bullocks)

"बैलों के लिये विशेष खाद्य

शताबरी और मद्यसार के साथ।"

किण्वन के जरीए मद्यसार बनाया जाता है। ये मद्यसार बैलों के आहार, पाचन और साधारण स्वास्थ्यबर्धन का काम करता है। मद्यसार बनाने के लिये शतावरी की जड़, उरद, चावल का उपयोग होता है।

शताबरी की जड़ में आस्पाराजीन (Asparagine) और साकारीन (Sacharine), जैसे तत्व होते हैं। ये तत्व टॉनिक के हिसाब से काम करते हैं।

बीमारी का लक्षण:-

- दुर्बल शरीर।
- काम करने में मन नहीं।
- खाने में रुचि नहीं।

बीमारी का कारण:-

- आंत में कीड़ा
- पेट में गड़बड़ी

बीमारी का चिकित्सा:-

- सताबरी की जड़ -२५० ग्राम
- कदू - ५०० ग्राम

- उरद् - २५० ग्राम
- चावल - ५०० ग्राम

एक मटका में ५ लीटर पानी, ५०० ग्राम कदु को छोटे छोटे काट कर मिलाया जाता है। इसमें २५०ग्राम सतावरी की जड़ को काट कर मिलाया जाता है। १०० ग्राम गुड़, १०० ग्राम दही, ९०० ग्राम नमक ड़ाल कर मटका के मुंह को एक मीट्टी की प्लेट से बंद किया जाता है, जैसे की बाहर का पवन अंदर नहीं जा सके। एक महीना के बाद उस मिश्रण से दो कप् प्रत्येक दिन बैल को पिलाया जाता है। शरीर सबल हो जाता है।

पीने का पानी का शुद्धिकरण

१) पीने का पानी का शुद्धिकरण (Water Purifire)

"पीने का पानी का शुद्धिकरण
निर्मली का बीज बड़े साधन"

पशुओं के पीने की पानी स्वच्छ होना चाहिये। गाँव और जंगल में पानी उपलब्ध नहीं हो पाता है। इसलिये पारम्परिक उपाय से पानी की शुद्धिकरण हर्बल उपाय से होता है। इस के लिए निर्मली *(Clearing Nut / Strychnus Potatorum)* की बीज का इस्तेमाल किया जाता है। सहजना की बीज भी उपयोग होता है।

निर्मली की बीज मैं स्रटीकनीन जैसे तत्व होते हैं। ये सब तत्व जिवाणु, वायरस और फंगस का नाश करते हैं। सहजना की बीज में मोरीजींन (Morigene), मोरीजीनीन (Morengenene) होते हैं। ये जिवाणु नाशक है।

बीमारी का लक्षण:-

- अस्वच्छ पानी
- पानी पीने से बुखार, डायरिया जैसे बीमारी

निर्मली

बीमारी का कारण:-

- जीवाणु (Bacteria)
- वायरस (Virus)
- कवक या फंगस (Fungas)

एक बाल्टी भर या मटकी भर जल में ३-४ सुखा, पका निर्मली बीज का चुर्ण साम के समय में डाला जाता है। सुबह में पानी की मानक बदल जाता है। ये विशोधन की काम ग्रामांचल में करना जरुरी होता है। सहजना का बीज - ३-४, एक बाल्टी पानी में रात भर रखें। पानी का शुद्धिकरण हो जाता है।

कुक्कुट (मुर्गी)के रोग का उपचार